विषय-हिन्दी

केवल एक प्रश्नपत्र 70 अंकों का होगा जिसके लिए तीन घंटे का समय निर्धारित है।

	अंक
1-(क) हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय (शुक्ल तथा शुक्लोत्तर युग)	5
(ख) हिन्दी पद्य का विकास का संक्षिप्त परिचय (रीतिकाल तथा आधुनिक काल)	5
2-गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से-	2+2+2=6
सन्दर्भ-2	
रेखांकित अंश की व्याख्या-2	
तथ्यपरक प्रश्न-2	

3-काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से 1+4+1=6

सन्दर्भ-1

व्याख्या-4

काव्य सौन्दर्य-1

4-संस्कृत गद्यांश अथवा पद्यांश का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद 1+3=4

5-निर्धारित पाठों के लेखकों एवं कवियों के जीवन परिचय एवं रचनायें 3+3=6

6-(1) संस्कृत के निर्धारित पाठों से कण्ठस्थ एक श्लोक 2

(जो प्रश्नपत्र में न आया हो)

(2) संस्कृत के निर्धारित पाठों पर आधारित दो अति लघूत्तरीय प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर 2

7-काव्य सौन्दर्य के तत्व- 2+2+2=6

क-रस-(हास्य एवं करूण रस की परिभाषा, उदाहरण, पहचान)

ख-अलंकार-(अर्थालंकार) उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा

ग-छन्द-सोरठा, रोला (लक्षण, उदाहरण, पहचान)

8-हिन्दी व्याकरण-शब्द रचना के तत्व 3+2+2+2+2=11

(क) उपसर्ग-अ, अन, अधि, अप, अनु, उप, सह, निर, अभि, परि, सु।

(ख) प्रत्यय-आई, त्व, ता, पन, वा, हट, वट।

(ग) समास-द्वन्द्व, द्विगु, कर्मधारय, बहुव्रीहि।

(घ) तत्सम शब्द।

(ङ) पर्यायवाची।

9-संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद- 2+2+2+2=8

क-सन्धि-यण, वृद्धि (परिभाषा, उदाहरण, पहचान)

ख-शब्द रूप (सभी विभक्तियों एवं वचनों में)

संज्ञा-फल, मति, मधु, नदी। सर्वनाम-तद्, युष्मद्।

ग-धातु रूप (लट्, लोट, लृट, विधिलिंग, लङ् लकारों में)

पठ, हसु, दृश, पच्।

घ-हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

10-निबन्ध रचना-वैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक समस्याओं पर आधारित एवं जनसंख्या , स्वास्थ्य शिक्षा, पर्यावरण एवं ट्राफिक रूल्स पर आधारित विषय। 6

11-खण्ड काव्य-संक्षिप्त कथावस्तु, घटनायें, चरित्र-चित्रण 3

आन्तरिक मूल्यांकन-प्रत्येक दो माह के अन्तिम सप्ताह में

प्रथम-अगस्त माह में 10 अंक-वाचन (भाषण, वाद-विवाद, विचारों की अभिव्यक्ति आदि)

द्वितीय-अक्टूबर माह में 10 अंक-व्याकरण सम्बन्धी

तृतीय-दिसम्बर माह में 10 अंक-सृजनात्मक निबन्ध, नाटक, कहानी, कविता, अपठित आदि।

अंक योग-30 अंक

byjus.com

(ब) निर्धारित पाठ्य वस्तु-

गद्य हेतु-

मित्रता	राम चन्द्र शुक्ल
ममता	जयशंकर प्रसाद
क्या लिखूँ	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
भारतीय संस्कृति	राजेन्द्र प्रसाद
ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से	रामधारी सिंह दिनकर
अजन्ता	भगवत शरण उपाध्याय
पानी में चन्दा और चाँद	जय प्रकाश भारती

काव्य हेतु-

सूरदास	पद
तुलसीदास	धनुष भंग, वन पथ पर
रसखान	सवैये, कवित्त
बिहारी लाल	भक्ति नीति
सुमित्रानन्दन पंत	चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार
महादेवी वर्मा	हिमालय से, वर्षा सुन्दरी के प्रति
रामनरेश त्रिपाठी	स्वदेश प्रेम
माखन लाल चतुर्वेदी	पुष्प की अभिलाषा, जवानी
सुभद्रा कुमारी चौहान	झांसी की रानी की समाधि पर
त्रिलोचन	बढ़ अकेला
केदार नाथ सिंह	नदी
अशोक बाजपेयी	युवा जंगल, भाषा एकमात्र अनन्त है

संस्कृत हेतु-

वाराणसी, अन्योक्ति विलासः, वीरः, वीरेण पूज्यते, प्रबुद्धो ग्रामीणः, देशभक्तः चन्द्रशेखर, केन किं वर्धते, अन्तरिक्ष यात्रा, भारतीया संस्कृतिः, जीवन सूत्राणि।

खण्ड काव्य- (जिलेवार)

खण्ड काव्य के लिये-

निर्धारित पाठ्य वस्तु-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम	अनुदानित जिले
1	मुक्तिदूत	अशोक कुमार अग्रवाल, 43, चाहचन्द रोड, इलाहाबाद	आगरा, बस्ती, गाजीपुर, फतेहपुर, बाराबंकी, उन्नाव।
2	ज्योति जवाहर	मोहन प्रकाशन, जवाहर नगर, कानपुर	कानपुर, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, ललितपुर, रामपुर, गोण्डा।
3	अग्रपूजा	हिन्दी भवन, 63 टैगोर नगर, इलाहाबाद	इलाहाबाद, आजमगढ़, मथुरा।
4	मेवाड़ मुकुट	शंकर प्रकाशन, 8/98 आर्यनगर, कानपुर	बुलन्दशहर, देवरिया, बरेली, सुल्तानपुर, सीतापुर, बहराइच।
5	जय सुभाष	रोहिताश्व प्रकाशन, 368 मालती सदन, ऐशबाग, लखनऊ	लखनऊ, सहारनपुर, फैजाबाद, बांदा, झांसी, हरदोई।
6	मातृ भूमि के लिये	आधुनिक प्रकाशन गृह, दारागंज, इलाहाबाद	गोरखपुर, मुरादाबाद, शाहजहांपुर, लखीमपुर खीरी, मैनपुरी, मुजफ्फरनगर।
7	कर्ण	बुनियादी साहित्य मन्दिर, पटना-4	अलीगढ़, जौनपुर, बलिया, हमीरपुर, एटा।
8	कर्मवीर भरत	हिन्दुस्तान बुक हाउस, अस्पताल रोड, परेड, कानपुर	मेरठ, फर्रूखाबाद, पीलीभीत, रायबरेली।
9	तुमुल	इन्डियन प्रेस पब्लिकेशन प्रा0 लि0, 36, पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद	वाराणसी, इटावा, बिजनौर, जालौन, बदायूँ।

नोट :-उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य जिलों/नये सृजित जिलों में खण्ड काव्य पूर्व वर्षों की भांति यथावत् पढ़ाये जायेंगे।

(3) π (पाई) की खोज।

(4) अपने घर के आय–व्यय का बजट बनाना।

(5) बीजगणितीय सर्वसमिकाओं जैसे $(a + b)^2 = a^2 + 2ab + b^2$, $(a - b)^2 = a^2 - 2ab + b^2$ का क्रियात्मक निरूपण करना।

(6) बैंक में खोले जाने वाले विभिन्न प्रकार के खातों एवं उनकी ब्याज दरों का अध्ययन करना।

(7) समतल या गत्ता काटकर विभिन्न ठोस आकृतियाँ बनाना एवं उनकी विशेषतायें लिखना।

(8) परिमेय संख्याओं का संख्या रेखा पर निरूपण।

(9) अपनी कक्षा के छात्रों की ऊँचाई और भार का सर्वे कीजिए तथा भार और ऊँचाई में सम्बन्ध बताइए।

(10) समाचार पत्र के माध्यम से किन्हीं तीन गल्ला मण्डियों के अनाज भाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

कक्षा–10

हिन्दी

पद्य

1–श्री श्याम नारायण पाण्डेय की रचना– ''हल्दीघाटी'' को सम्मिलित किया गयाः–

हल्दीघाटी

मेवाड़–केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़–दौड़ करता था रण,
वह मान–रक्त का प्यासा था।।
चढ़कर चेतक पर घूम–घूम,
करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ–साथ
मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।

चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट–काट,
करता था सफल जवानी को।।

सेना–नायक राणा के भी,
रण देख देखकर चाह भरे।
मेवाड़ सिपाही लड़ते थे
दूने तिगुने उत्साह भरे।।

क्षण मार दिया कर कोड़े से,
रण किया उतर कर घोड़े से।
राणा रण कौशल दिखा–दिखा,
चढ़ गया उतर कर घोड़े से।।
क्षण भीषण हलचल मचा मचा,
राणा–कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने का यह
रण चण्डी जीभ पसार बढ़ी।।

वह हाथी दल पर टूट पड़ा,

मानो उस पर पवि छूट पड़ा।
कट गई वेग से भू, ऐसा
शोणित का नाला फूट पड़ा।।
जो साहस कर बढ़ता उसको,
केवल कटाक्ष से टोक दिया।
जो वीर बना नभ–बीच फेंक,
बरछे पर उसको रोक दिया।।

क्षण उछल गया अरि घोड़े पर,
क्षण लड़ा सो गया घोड़े पर।
बैरी दल से लड़ते–लड़ते,
क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर।।

क्षण भर में गिरते रुण्डों से,
मदमस्त गजों के शुण्डों से।
घोड़ों से विकल वितुण्डों से,
पट गई भूमि नरमुण्डों से।।

ऐसा रण राणा करता था,
पर उसको था सन्तोष नहीं।
क्षण–क्षण आगे बढ़ता था वह,
पर कम होता था रोष नहीं।।

कहता था लड़ता मान कहाँ,
मैं कर लूँ रक्त–स्नान कहाँ?
जिस पर तय विजय हमारी है,
वह मुगलों का अभिमान कहाँ? (श्याम नारायण पाण्डेय)

2– श्री त्रिलोचन शास्त्री की रचना– ''बढ़ अकेला'' के स्थान पर श्री मैथली शरण गुप्त की रचना– **''भारत माता का मन्दिर यह''** को सम्मिलित किया गयाः–

<u>भारत माता का मंदिर यह</u>

भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

जाति–धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद–व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ।
राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का,
सुलभ एक सा ध्यान यहाँ,

भिन्न–भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।
नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उन्माद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने
मन के चित्र बना लें हम।
सौ–सौ आदशों को लेकर
एक चरित्र बना लें हम।

बैठो माता के आँगन में
नाता भाई–बहन का
समझे उसकी प्रसव वेदना
वही लाल है माई का
एक साथ मिल बाँट लो
अपना हर्ष विषाद यहाँ है
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

मिला सेव्य का हमें पुजारी
सकल काम उस न्यायी का
मुक्ति लाभ कर्तव्य यहाँ है
एक एक अनुयायी का
कोटि–कोटि कंठों से मिलकर
उठे एक जयनाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ। (मैथिलीशरण गुप्त)

3–**संस्कृत हेतु निर्धारित पाठ्यवस्तु** में "अंतरिक्ष यात्रा'' नामक पाठ के स्थान पर ''छांदोग्य उपनिषद षष्ठोध्यायः से आरूणि श्वेतकेतु संवाद'' से सम्बन्धित निम्नांकित अंश को सम्मिलित किया गयाः–

संस्कृत परिचायिका

स ह द्वादशवर्ष उपेत्य चतुर्विँ्शतिवर्षः सर्वान् वेदानधीत्य महामना अनूचानमानी स्तब्ध एयाय। तँ्हपितोवाच श्वेतकेतो यन्नु सोम्येदं महामना अनूचानमानी स्तब्धोऽस्युत तमादेशमप्राक्ष्यः।

श्वेतकेतुर्हारुणेय आस तँ्ह पितोवाच श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यम्। न वै सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति।।

येनाश्रुतँ्श्रुतं भवत्यमतं। मतमविज्ञातं विज्ञातमिति। कथं नु भगवः स आदेशो भवतीति।।

न वै नूनं भगवन्तस्त एतदवेदिषुर्यद्ध्येतदवेदिष्यन् कथं मे नावक्ष्यन्निति भगवाँ्स्त्वेव मे तद्ब्रवीत्विति तथा सोम्येति होवाच।।